B.A. Part-I Hons session 2019 -20
Girija uranw Depatt of Psy Paper IInd
R.M.C. Sasaram

5 वस्तुओं को गलत स्थान पर रखना — वस्तुओं को निश्चित स्थान पर न रखकर गलत स्थान पर रखना या भूल जाना या किसी की कोई वस्तु लेकर वापस लौटना भूल जाना आदि भी दैनिक

Scanned with CamScanner

जीवन की मनोविकृतियाँ है। जब हम किसी वस्तु को गलत स्थान पर रखकर भूल जाते है तो उसके पीछे भी अचेतन का ही हाथ रहता है इससे अचेतन इच्छाओं की अभिव्यक्ति होती है। इस संबंध में Jones का एक अच्छा उदाहरण है, उसे धुम्रपान नालिका का सेवन करने की आदत थी जब उसे आफिस खाली होता है तब वह अपने पाइप को भूल से ऐसे स्थान पर रख देता है जिसे वह काफी खोजने पर भी प्राप्त नहीं कर सकता था। जब खाली कम हो जाती थी तब वह पाइप मिल जाती थी। Ernest ने भी उदाहरण दिया है उसे और उसकी पत्नी को एक उत्सव में सम्मिलित होना था Ernest को उस उत्सव में जाने की एक दम इच्छा नहीं थी फिर भी वह पत्नी के जोर देने पर वह तैयार हो गया जब वह कपड़ा पहनने के लिए बॉक्स खोलने को तैयार हुआ तो चाभी नहीं मिली और वे दोनों उत्सव में सम्मिलित नहीं हो सके। जब बक्से को तोड़ा गया तो उसके अन्दर चाभी मिली। विश्लेषण करने पर यह पता चला की अचेतन में दमित इच्छा के कारण चाभी को बाक्से में रखकर बन्द कर दिया था।

(6) भ्रान्तिपूर्ण क्रियाएँ :- अनजाने या भूल से की गई गलतियाँ भी है किन्तु जीवन की मनोविकृतियाँ होती है। हम किसी कार्य को करने के लिए

संकल्प करते हैं पर उसे भूल जाते हैं या कभी-कभी दूसरी क्रिया करते हैं। पति से पत्नी ने बाजार से कोई चीज मंगायी परन्तु पति उसे लाना ही भूल गये इन भूलों को हम भूल कहकर संतोष कर लेते हैं लेकिन ये भूले दमित इच्छाओं के कारण ही होती हैं। Brill ने इस सम्बन्ध में एक उदाहरण दिया है। जिसमें उसने एक डाक्टर के बारे में वर्णन किया है। डॉक्टर ने भूल से अपने बीमार चाचा को Digitalis के जगह पर Hyascine नामक दवा अधिक मात्रा में दे दी। जिसके कारण उसकी चाचा की मृत्यु हो गयी। मनोविश्लेषण करने पर पता चला कि डाक्टर के अचेतन मन में चाचा के प्रति दैवस भावना छिपी थी। इस प्रकार इस भूल के द्वारा अचेतन मन की इच्छा व्यक्त होती है।

7. प्रतीकात्मक क्रियाएँ — फ्रायड ने प्रतीकात्मक या सांकेतिक क्रियाओं को भी दैनिक जीवन की मनो-विकृति माना है। इन क्रियाओं का सामान्य रूप से कोई अर्थ नहीं होता, परन्तु विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि ये क्रियाएँ सार्थक होती हैं। इन प्रतिकात्मक क्रियाओं के द्वारा अचेतन में दमित इच्छाएँ प्रकट होती हैं। मुख्य रूप से इच्छाएँ निम्न-लिखित प्रतिक्रियात्मक हैं। बटन लगाना खोलना, अंगूठी को बार-बार निकालना पहनना, चाभी के रिंग को बार-बार घुमाना, दाँत, पसीना, बार-बार मुँह ऐंठना तथा

Scanned with CamScanner

सह सुचालना।

इस प्रकार यदि कोई विवाहित स्त्री अपने पति द्वारा दी गयी अँगूठी को बार-बार निकालने तथा उससे छुटकारा पाना चाहती है।

अन्त में एवं संक्षेप में कहा जा सकता है कि दैनिक जीवन की भूलें आकस्मिक तथा अर्थहीन नहीं होती है बल्कि इनके पिछे कोई न कोई कारण अवश्य रहता है। असामान्य व्यवहार को समझने में दैनिक जीवन में होनेवाली इन भूलों एवं गलतियों की बहुत ही उपयोगिता है। ये भूलें एक प्रकार के सांकेतिक लक्षण है जिनके पिछे विषम दमित इच्छाओं का राज रहता है। इसके आधार स्नायु-विकृतियों की चिकित्सा आसानी से हो सकती है। तथा अन्य रोगियों की कठिनाइयों को समझने में मदद मिलती है।

Scanned with CamScanner